कविता

लघुता की महत्ता

शिराली रूनवाल*

छोटा बनकर कर सकते तुम
औरों पर उपकार,
इक सुई निकाल फाँस जहाँ
रखी रहे तलवार!

नन्हीं चींटी हाथी तक को
पल में देती मात,
घुस जाए जो सूँड में
खट्टे कर दे दाँत!

छोटी-सी मक्खी न डरती
बैठ सिंह की मूँछ,
अगला घाघ शिकारी होगा
मार न पाए पूँछ!

छोटी मछली फँसे नहीं खुद
मछुआरे के जाल,
छोटा तिनका पड़ा आँख में
करे हाल बेहाल!

छोटी-सी बंसी से आती
सुमधुर, सुरमय सीख,
बड़ा बाँस किस काम का,
फटकर निकले चीख!

© NCERT not to be republished

* *कनिष्ठ शल्य चिकित्सक*, प्रसूति एवं स्त्री रोग विभाग, ग्वालियर, मध्य प्रदेश

नन्हा बीज पड़े धरती पर
बरगद बनकर छाए,
नन्हे पंछी के पंखों से
नभ असीम नप जाए!

छोटे डग की क़दमताल पर
कछुआ ही तो जीता,
अलसाया खरगोश दौड़ में
तोड़ न पाया फीता!

छोटी-सी चिंगारी से भी
भड़के भीषण आग,
फल का कीड़ा न जाने कब
बन जाए तक्षक नाग!

छोटी-छोटी बचत से बढ़ती
ज्यों गुल्लक की शान,
नाजुक फूलों का संग पाकर
महक उठे गुलदान!

भीषण आँधी-तूफां में भी
'लोच' करे उद्धार,
हरी घास का बाल न बाँका
उखड़ें खड़े चिनार!

छोटी कुटिया रहे सुरक्षित
गिरे न उस पर गाज,
छोटी नैया पार लगाए
डूबे बड़े जहाज!

बादल बनकर शुद्ध नीर भी
श्याम वर्ण अपनाए,
बरखा की बूँदों में बँटकर
इन्द्रधनुष-सा छाए!

© NCERT not to be republished